THE MINISTER OF TOURISM AND CIVIL AVIATION . (DR KARAN SINGH) (a) Yes Sir

(b) . Although there is no reservation for Scheduled Caste/Tribe candidates for appointment to the post of Assistant Commercial Manager, Indian Airlines on their own had decided to give some weightage to such candidates and accordingly selected four candidates belonging to these communities for this post of whom one has since been appointed as Assistant Commercial Manager

(c) 1 5% at present

**Repayment of Loans to U S S R**

5093. SHRI PILOO MODY Will the Minister of FINANCE be pleased to state

(a) whether in the year 1970 71 the total disbursement to the Soviet Union by way of debt servicing was more than the total debts of the Soviet Union outstanding at our credit , and

(b) if so, the reaction of the Government in this regard ?

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN) (a) and (b) No, sir At the beginning of the year 1970-71, the total debt outstanding to the U S S R amounted to Rs 394 8 crores During the year 1970-71 debt service payments both on account of principal and interest to the U S S R , amounted to Rs 70 21 crores

**खुदाई कार्य मे प्रगति**

5094 **श्री शकर दयाल सिंह** क्या **शिक्षा और समाज कल्याण** मत्री यह बताने की कृपा करेगे कि

(क) देश मे इस समय कितने स्थानो पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के तत्वावधान मे खुदाई का कार्य जारी है , और

(ख) स्वतन्त्रता के पश्चात् देश मे पुरातत्व खुदाई मे क्या प्रगति हुई है ?

**शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय और संस्कृति विभाग में उप मंत्री (श्री डी० पी० यादव)** (क) भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा 6 स्थलो पर पिछले कार्य मौसम मे (अक्टूबर 1970 से मार्च 1971 तक) खुदाई करवाई गई जिसके नाम है

(1) पुराना किला (दिल्ली), (2) सरकोटदा (कच्छ) (3) बर्जाहोम (कश्मीर) (4) कुशिनगर (जिला देवरिया) (5) काशीपुर (जिला नैनीताल) (6) सफाई (जिला एटा) । इन 6 स्थलो पर आगामी मौसम मे भी काम जारी रहेगा। पिछले कार्य मौसम के दौरान चंडीगढ, पाटलिपुत्र, मार्तण्ड तथा ध्यूर मे खुदाई का काम हाथ मे लिया गया ।

(ख) स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत ने हमारे ज्ञान की लुप्त कडियो को जोडने के लिए विशेष पुरातात्विक महत्व के स्थलो पर खुदाई करवाने का एक सुनियोजित कार्यक्रम जारी रखा और इसमे काफी प्रगति की ।

विस्तृत ब्यौरा इस प्रकार है

स्वातन्त्र्योत्तर काल मे मद्रास और हिमाचल प्रदेश मे प्रारम्भिक पाषाण युग के काफी स्थलो का पता लगाया गया और उनकी खुदाई की गई जिनके नाम क्रमश 'मद्रसियन और 'सोहन' सस्कृति है । अतिरामपरवम (जिला चिंगलेपेट) मे द्विमुखो हस्त कुठार विशिष्ठ आरभिक पाषाणयुग के मद्रसियन उद्योग के अति महत्व पूर्ण स्थलो के बारे मे तो विस्तार से सर्वेक्षण किया गया जबकि हिमाचल प्रदेश मे गुलेर के आसपास के क्षेत्र की खोज की गई और उनकी आशिक रूप से खुदाई की गई जिसके परिणाम-स्वरूप एक मुखो गडासे, गुटिका हस्तकुठार, द्विमुखी गडासे आदि के सुन्दर नमूने प्राप्त हुए ।

केन्द्रीय दक्षिण और पूर्वी भारत मे मध्य और उत्तर पाषाण युग के अवशेष प्राप्त हुए । कुछ उत्तर पाषाणयुगेन स्थल, जहाँ खुदाई की गई है ये है—मध्य प्रदेश मे होशंगाबाद, जिला बर्दमान (पश्चिम बगाल) मे बीरभानपुर तथा जिला तिरुनेलवेली (तमिलनाडु) मे टेरी स्थल अत्यन्त महत्वपूर्ण नवपाषाण युगो स्थल बर्जाहोम

है जिसकी खुदाई कश्मीर में की गई और जहां गर्तघरों, ओपदार अस्थिये ; पाषाण औजारों तथा मानव और पशु गबाधानों से उत्तरी नव-पाषाण संस्कृति का जिस के संभवत भारतेत्तर सहसंबंध थे, काफी रोचक प्रमाप प्राप्त हुआ।

बुचई जिला मयूरगंज), नागाजुनकोंडा (जिला गुटूर), पायमपल्लोर(जिला उत्तरी अर्काट तथा ब्रह्मगिरि (जिलाचितलदुर्ग) पर खुदाई से पूर्वी भारतीय तथा दक्षिणी नवपाषाण संस्कृतियों के बारे में विस्तृत बातों का पता चला।

इससे कही अधिक महत्वपूर्ण खोज थी भारत में सिंधुघाटी सभ्यता के शतापिक स्थल जो उत्तर में पंजाब के रोपड से लेकर दक्षिण मे गुजरात के भागवत तथा पूर्व मे उत्तर प्रदेश के मेरठ डिवीजन तक फैले हुए है। वास्तव मे अन्तिम नामवाले स्थल ने 'सिंधु' सभ्यता के नामकरण के औचित्य के संबंध मे विद्वानो को फिर से सोचने के लिए बाध्य कर दिया है क्योंकि अब 'हरप्पा' संस्कृति के रूप मे इसका फिर से नामकरण किया गया है। हरप्पा सस्कृति के अनेको खुदे हुए स्थलो मे से पाँच विशेषरूप से महत्व-पूर्ण है। राजस्थान कालीबांगन से, जिसमे नगरयोजना के पैटर्न दिखाए हुए हैं जहाँ पश्चिम में दुर्ग और पूर्व मे निवास स्थल है जो हरप्पा और मोहनजोदड़ो से मिलते-जुलते हैं पूर्व हरप्पा बस्तियों का पता चलता है जिसमे एक जुता हुआ खेत भी है जो संभवत ससार में आविष्कृत सर्व-प्रथम कृषि भूमि हैं। गुजरात के लोथलो से एक गोदी के अवशेषों का पता चला है जिसके साथ इस बात के प्रमाण मिले है कि फारस की खाड़ी के देशो के साथ व्यापार चलता था। पंजाब मे रोपड़ और उत्तर प्रदेश में आलमगिरपुर परिपक्व हरप्पा संस्कृति के स्थल होने के कारण उनसे हरप्पा बस्तियों के ऊपर चित्रित-धूसर भांड संस्कृति के अवशेषों का पता चला है। कच्छ में सरकोटदा से, जिसकी खुदाई अभी हाल ही में हुई है, ऐसे आरक्षित दुर्ग और निवास स्थलों का पता चला है जो पूर्व हरप्पा और हरप्पा और उत्तर हरप्पा कालों के हैं।

दक्कन और पश्चिमी भारत के उत्तर हरप्पा ताम्रपाषाण संस्कृति के ज्ञान में महत्वपूर्ण वृद्धि की गई। राजस्थान से जिला उदयपुर के जिलंद नामक स्थान पर खुदाई की गई जोकि पश्चिमी भारत के बानस संस्कृति का एक महत्वपूर्ण प्रारूप स्थल है। उत्तरी डेकन में ताम्रपाषाणयुगीन जिन स्थलों की खुदाई की गई है वे हैं—प्रकाश (जिला धुलिया) और ताप्ती सिस्तान मे बहल (जिला खानदेश) जिनसे दक्कन प्रारम्भिक ऐतिहासिक संस्कृति के बारे में भी उपयोगी प्रमाण मिले हैं।

सफ़ई (जिला एटा) से हाल ही में जो खुदाई की गई है उससे गैरिक वर्ण भांड की तुलना में रहस्यमय ताम्रसंग्रहो की समस्या को सुलझाने मे सहायता मिली है। हस्तिनापुर, अहिक्षेत्र अलमगिरपुर, रोपड इत्यादि स्थानों पर पाये गये चित्रित धूसर भांडो ने ये केवल यथा-कथित 'अधयुग' पर नये सिरे से रोशनी डाली है अपितु भारत की प्रारम्भिक संस्कृति, जो महा-भारत से सम्बद्ध समझी जाती है, के विषय मे भी प्रचुर प्रमाप सामग्री उपलब्ध की है।

अहिक्षेत्र, हस्तिनापुर और पुराना किला (दिल्ली) जैसे स्थानों पर की गई खुदाई से तो पूर्व मौर्य कालीन और उत्तर मौर्य कालीन संस्कृति को उस शृंखला का पता चलता है जो युग कुमाण और गुप्त बाद के काल में से होकर गुजरी है जबकि जगतग्राम और रत्नगिरि के स्थलों से ईसवी सन् के प्रारम्भिक कालों क्रमश ब्रह्मी और बौद्ध से संबधित रोचक अवशेष प्रकाश में आये है :

जिला गुटूर मे नागार्जुनकोंडा पर व्यापक अंश उद्धार खुदाई की गई जिससे कृष्णा नदी के नागार्जुन सागर झील में अधिकांश स्थल डूब गया है। इस स्थल से पाषाण, नव पाषाण और महापाषाण युगो से लेकर मध्ययुग तक के अवशेष प्राप्त हुए हैं। प्रारंभिक ईसवी शताब्दी के ऐतिहासिक काल से संबंधित अनेकों बौद्धों स्तूप, चैत्य और बिहार तथा कुछ ब्रह्म मंदिर इक्ष्वाकु राजाओं का एक दुर्ग एक सीढ़ीदार स्नानघाट

तथा एक अखाड़ा मिला। हलके अवशेष और अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण स्मारक उठाकर एक पहाड़ी पर स्थापित कर दिए गए है जोकि आजकल नागार्जुनसागर झील में एक टापू है।

### ग्रांड ट्रंक रोड को अधिकार में लेने का प्रस्ताव

5095. **श्री शंकर दयाल सिंह** : क्या नौवहन तथा परिवहन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या केन्द्रीय सरकार का विचार ग्रांड ट्रंक रोड को अपने अधिकार मे लेने का है;

(ख) क्या उन्हें पता है कि बिहार में उक्त सड़क की दशा अत्यन्त शोचनीय है तथा वर्षा ऋतु में कर्मचारियों तथा मोटर गाड़ियों को इधर उधर रुक जाना पडता है; और

(ग) क्या सरकार ने कोई ऐसी योजना तैयार की है जिससे सभी राज्य इसका उपयोग कर सकें ?

**संसदीय कार्य तथा नौवहन और परिवहन मंत्री (श्री राज बहादुर)** (क) से (ग): पेशावर से कलकत्ता तक स्थल मार्ग का पुराना नाम ग्रांड ट्रंक सड़क है। अब राष्ट्रीय राजमार्गों का नाम संख्याओं के रूप में दिये गये है। राष्ट्रीय राजमार्ग 1 वह सड़क है जो अमृतसर से जालन्धर, लुधियाना, करनाल और दिल्ली को जाती है। दिल्ली से राष्ट्रीय राजमार्ग 2 आगरा, इटावा, बोगनीपुर, कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, ससराम, धनबाद वर्तमान कलकत्ता जाती है। पुराना ग्रांड ट्रंक सड़क दिल्ली से बुलन्दशहर, अलीगढ़ और कानपुर जाती है। यह भाग राष्ट्रीय राजमार्ग नही है बल्कि राज्य मुख्यमार्ग है जिसका अनुरक्षण उत्तर प्रदेश सरकार करती है। यह सड़क राष्ट्रीय राजमार्ग 3 के समान्तर जाती है और इस सड़क को राष्ट्रीय राजमार्ग के रूप में अपने हाथ में लेने का विचार नहीं है। राष्ट्रीय राजमार्ग 2 का शेष भाग नहीं है जो पुरानी ग्रैंड ट्रंक सड़क है और इसका अनुरक्षण और सुधार राष्ट्रीय राजमार्ग निधियों से किया जा रहा है। ग्रैंड ट्रंक सडक का बिहार में पड़ने वाला भाग इकहरी गली वाली काली सतह की तंग और कमजोर पटरी वाली सड़क है। अपर्याप्त चौडाई के कारण भारी मोटर गाड़ियों का आरपार जाने में कच्चे किनारों का इस्तेमाल करना पड़ता है और वर्षा के समय वे कभी कभी जमीन में फंस जाते है। इस सड़क को चौड़ा करने और सशक्त करने का काम चौथी योजना काल में किया जा रहा है। अन्य मुख्य मार्गों की भांति ग्रैंड ट्रक सड़क भी यातायात के लिए उपलब्ध है और किसी ऐसी योजना बनाने का प्रश्न नही उठता है जिससे इसका प्रयोग सब राज्य कर सकें।

### UNESCO Coupon Scheme for Inflow of Cultural and Scientific Material

5096. SHRI C. CHITTIBABU : Will the Minister of EDUCATION AND SOCIAL WELFARE be pleased to state .

(a) the outline of UNESCO coupon scheme in regard to the inflow of cultural and scientific material ;

(b) whether the coupons are payable in local currency of the country requiring such material ; and

(c) whether Government propose to popularise the scheme in India for a free flow of ideas and cultural achievements abroad ?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE (SHRI D. P. YADAVA) : (a) The UNESCO Coupon Scheme enables institutions and individuals in any one country to buy publications, educational films and scientific material from other countries without their having to acquire foreign exchange for the purpose. The purchaser buys coupons, paying for them in his local currency, and sends them directly to the supplier abroad who executes the order and redeems the coupons with UNESCO in the currency of his choice. In all participating countries, the Governments have appointed distributing agencies to sell UNESCO Coupons. In India, the distributing body is the Indian National Commission for Co-operation with UNESCO. UNESCO coupons are intended for the use of both